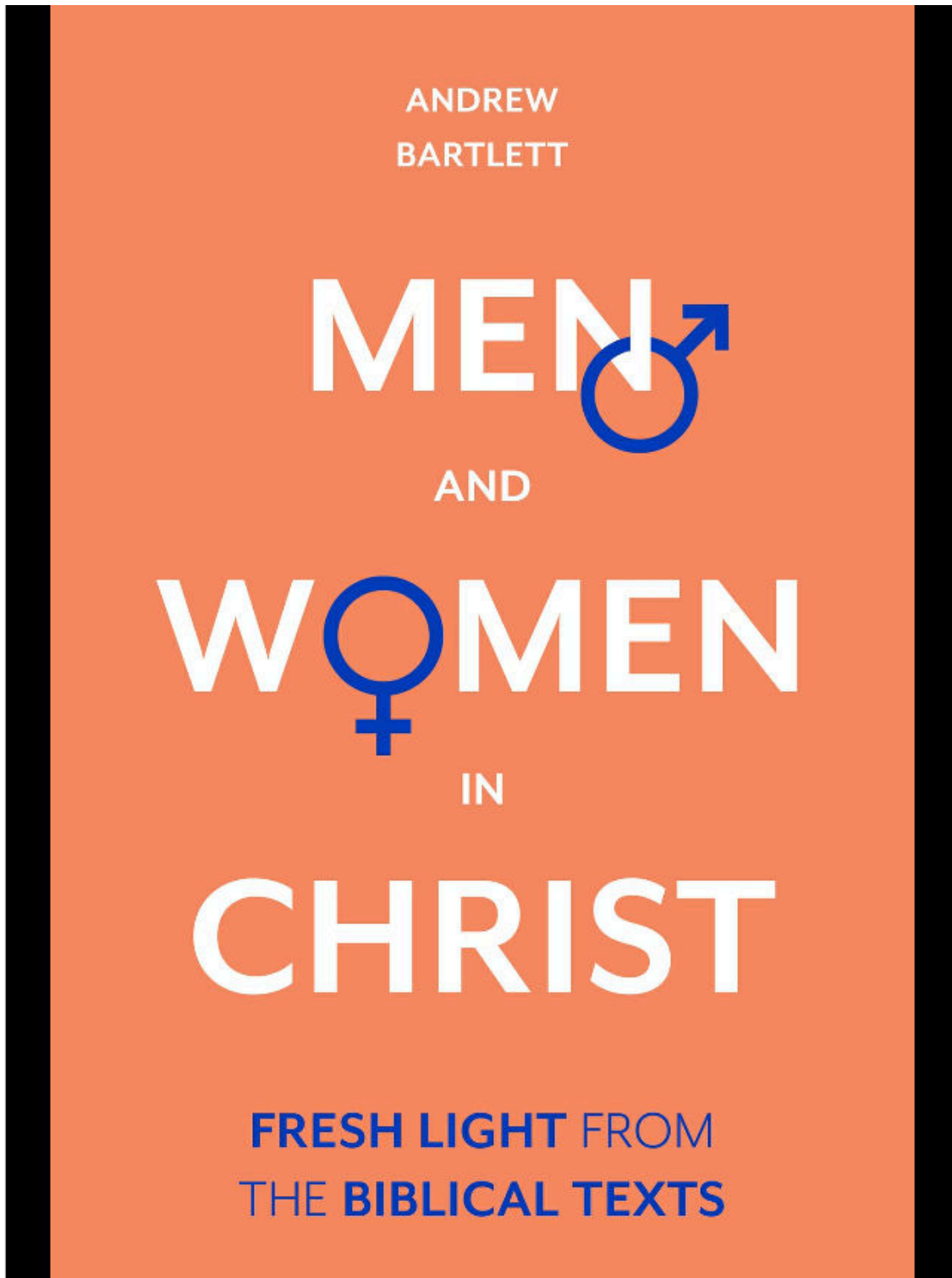


Bartlett, Andrew. Men and Women in Christ IVP

एंड्रयू बार्टलेट (Andrew Bartlett) KC आज मुख्य रूप से एक अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं। एक तीक्ष्ण विचारक के रूप में उन्होंने नए नियम में और पूरी बाइबल में स्त्री और पुरुष की भूमिका के विषय को सभी धर्मवैज्ञानिक तर्कों को ध्यान में रखते हुए गहराई से जाँचा और पूरी तरह खोला है। वे इस विषय को बिना पूर्वाग्रह के देखने का प्रयास करते हैं, और मेरे विचार में वे इसमें सफल हुए हैं। यह इस बात से पहचाना जा सकता है कि जहाँ तर्क सचमुच कमज़ोर हैं या ठीक से प्रमाणित नहीं हैं, वहाँ वे कुछ स्थानों पर समानतावादी स्थिति की भी आलोचना करते हैं। इस दस्तावेज़ में मुख्य अध्यायों का वह सारांश है जिसे स्वयं बार्टलेट ने लिखा है।



जर्मन अनुवाद: Hans-Jörg Ronsdorf, अक्टूबर 2026 में संशोधित।

यह दस्तावेज़ एंड्रयू बार्टलेट की अनुमति से वेबसाइट www.hans-joerg-ronsdorf.de पर प्रकाशित किया गया है।

पवित्र शास्त्र के अनुरूप मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि कलीसिया के स्वास्थ्य को सहारा देने के लिए स्त्रियों को भी कलीसिया में शिक्षा देने और अगुवाई करने की सेवाएँ निभानी चाहिए।

25 मई 2025

अध्याय 1 का सारांश: परंपरा पर पुनर्विचार, एकता की खोज

1. समानतावादियों और पूरकतावादियों के बीच ध्रुवीकरण करने वाले विभाजन से मसीहियों की एकता को हानि पहुँच रही है।
2. बाइबल की वह पारंपरिक व्याख्या, जिसके अनुसार स्त्रियाँ स्वभाव से पुरुषों से हीन हैं, उचित ही अस्वीकार कर दी गई है, क्योंकि वह वास्तविक पाठ की अपेक्षा पितृसत्तात्मक संस्कृति पर अधिक आधारित थी। आज समानतावादी और पूरकतावादी दोनों स्त्रियों और पुरुषों को स्वभाव से समान मूल्य वाला मानते हैं, और अब दोनों यह स्वीकार करते हैं कि स्त्रियाँ समाज में सामान्य रूप से अगुवाई के कार्य संभाल सकती हैं। फिर भी पूरकतावादी कलीसिया में और विवाह में पुरुष की अगुवाई पर ज़ोर देते हैं।
3. बाइबल की विश्वासयोग्य व्याख्या परंपरा की अपेक्षा पवित्र शास्त्र को प्राथमिकता देती है, संस्कृति पर ध्यान देती है, संदर्भ में मूल भाषा तक लौटती है, सामंजस्य की खोज करती है और एक मसीह-केंद्रित, सम्पूर्ण धर्मशास्त्र-आधारित (कैनोनिकल) दृष्टिकोण अपनाती है; और वह यह सब आत्मिक खुलेपन और व्यावहारिक बुद्धि के साथ करती है (परिशिष्ट 1)।
4. इन विधियों को लागू करने से इस पुस्तक के निष्कर्ष निकलते हैं, अर्थात् यह कि पूरकतावादी और समानतावादी दोनों स्थितियाँ आंशिक रूप से सही और आंशिक रूप से गलत हैं।
5. यदि मसीही इन प्रश्नों में एक दूसरे के और निकट आ सकें, तो इससे प्रभु प्रसन्न होगा और एक उलझे हुए और घायल संसार में नमक और ज्योति के रूप में कलीसिया की सेवा सुदृढ़ होगी।

अध्याय 2 का सारांश: पति और पत्नी, पुरुष और स्त्रियाँ: 1 कुरिन्थियों 7

1. यद्यपि 1 कुरिन्थियों 7 नए नियम में विवाह पर सबसे लंबे विवेचन के रूप में अलग दिखाई देता है और उसमें नए नियम में पति के अधिकार का एकमात्र स्पष्ट उल्लेख है, फिर भी पूरकतावादी विश्लेषणों में इस खंड की प्रायः अनदेखी की जाती है या उसे कम महत्व दिया जाता है।
2. पौलुस का विश्व-दृष्टिकोण मसीह-केंद्रित है। सृष्टि दृष्टि में बनी रहती है, परन्तु छुटकारा और नई सृष्टि सबसे आगे हैं। विवाह के विषय में उनका दृष्टिकोण इस बात को ध्यान में रखता है कि मसीहा आ चुका है और अंत निकट दिखाई दे रहा है। इससे विश्वासियों की सभी वर्तमान जीवन-परिस्थितियाँ सापेक्ष हो जाती हैं; जो आने वाला है, उसकी तुलना में वे महत्वहीन हो जाती हैं। इसी प्रकाश में वे अविवाहित रहने की सलाह देते हैं और विवाह के विषय में उल्लेखनीय रूप से समान अधिकारों वाला दृष्टिकोण रखते हैं।

3. जैसा कि पौलुस पद 3-5 में सिखाते हैं, पति और पत्नी का अधिकार समान है। वे एकतरफ़ा निर्णय लेने को अस्वीकार करते हैं। पति की ऐसी अगुवाई, जिसे पत्नी पर एकतरफ़ा अधिकार के रूप में समझा जाए, प्रेरित की शिक्षा के सीधे विरोध में है।
4. पद 3-5 को उचित रूप से पति के एकतरफ़ा अधिकार से केवल शारीरिक संबंध और साझी प्रार्थना पर लागू होने वाला कोई विशेष अपवाद नहीं माना जा सकता।
5. जहाँ तक पद 1-16, 25-28 और 32-40 से पहचाना जा सकता है, पौलुस पुरुषों और स्त्रियों के व्यक्तिगत संबंधों में पूर्ण समानता की अपेक्षा रखते हैं। यदि पौलुस पत्नी पर पति के पदानुक्रमी, एकतरफ़ा अधिकार में विश्वास करते, तो यह समझ से बाहर लगता कि उन्होंने ये शब्द लिखे।
6. इसका अर्थ यह नहीं कि पौलुस आधुनिक अर्थ में समानतावादी हैं। वे विवाह में किसी व्यक्ति को अपने अधिकारों का दावा करने के लिए नहीं बुलाते; बल्कि वे दोनों समान अधिकार वाले साथियों में से प्रत्येक को बुलाते हैं कि वह दूसरे के अधीन रहे, रोमियों 12:10; गलातियों 5:13; फिलिप्पियों 2:3 के अनुरूप।

अध्याय 3 का सारांश: पदानुक्रम, अधीनता और प्रेम: कुलुस्सियों 3 और इफिसियों 5

1. कुलुस्सियों और इफिसियों की पत्रियाँ लगभग एक ही समय में लिखी गई थीं और उन्हें एक कलीसिया से दूसरी कलीसिया तक पहुँचाया जाना था; इसलिए उन्हें एक साथ देखना उचित है।
2. जहाँ पदानुक्रम उचित हों, वहाँ पौलुस उन्हें अस्वीकार नहीं करते।
3. “अधीन रहना” (*hupotassō*) शब्द में किसी दूसरे से पद में नीचे होने का विचार निहित है। फिर भी पत्रियों को अधीन रहने का पौलुस का निर्देश अपने आप में विवाह में किसी पदानुक्रम को मानकर नहीं चलता। हमें यह निर्णय करना होगा कि क्या उनका अर्थ यह है कि पत्रियाँ इसलिए अधीन रहें क्योंकि उनके पतियों को उन पर अधिकार है, या उनका अर्थ यह है कि पत्रियाँ ऐसा व्यवहार करें मानो उनके पति उनसे ऊपर हों।
4. मसीही संबंधों में अधीनता का अर्थ किसी दूसरे मनुष्य की बिना प्रश्न किए आज्ञा मानना नहीं है। किसी दूसरे मनुष्य के पीछे चलकर अन्याय करने का कोई मसीही कर्तव्य नहीं है।
5. पहली शताब्दी की संस्कृति में विवाह के विषय में कोई एक समान दृष्टिकोण नहीं था, परन्तु सामान्यतः पत्नी पर पति का एकतरफ़ा अधिकार होता था।
6. पत्रियों को अधीन रहने और पतियों को प्रेम करने के पौलुस के निर्देश आंशिक रूप से व्यावहारिक विचारों से निर्धारित हैं।
7. पौलुस बच्चों पर माता-पिता के अधिकार का समर्थन करते हैं, परन्तु दासों पर दास-स्वामियों के अधिकार का नहीं। घर के तीन संबंधों (पत्नी और पति, बच्चा और पिता, दास और स्वामी) की तुलना से यह सिद्ध नहीं होता कि पौलुस पत्नी पर पति के एकतरफ़ा अधिकार को उचित ठहराते हैं।

अध्याय 4 का सारांश: विवाह उद्धारकर्ता का चित्र है: इफिसियों 5

1. नई सृष्टि की पूर्णता में एकमात्र विवाह मसीह और उसके लोगों का मिलन होगा। इफिसियों 5 में पौलुस सिखाते हैं कि वर्तमान युग में विवाह को इसी वास्तविकता की ओर एक संकेत के रूप में देखा जाना चाहिए।

पति और पत्नी एक दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, इसे उस बात का भाग समझना चाहिए जो इससे निकलती है कि वे मसीह-समान जीवन जीने के लिए पवित्र आत्मा से भरे जाते हैं।

2. पौलुस कलीसिया के साथ मसीह के संबंध और विवाह में पति की बुलाहट, दोनों का वर्णन करने के लिए "सिर" के रूपक का प्रयोग करते हैं। यूनानी में यह केवल एक अर्थ वाला कोई स्थिर रूपक नहीं था, इसलिए उसका अर्थ संदर्भ से निर्धारित किया जाना चाहिए। इफिसियों 1:21-23 में बल संभवतः मसीह के प्रभुत्व पर है, 4:13-16 में उसके उद्धारकर्ता होने पर। चार विशेषताएँ दिखाती हैं कि पौलुस दूसरा अर्थ पति पर लागू करते हैं। वे हैं: (क) 5:23 में "कलीसिया का सिर" और "वह स्वयं देह का उद्धारकर्ता" का समानाधिकरण (अपोज़िशन); (ख) 5:25-33 में पौलुस के यहाँ उद्धारकर्ता होने का विषय; (ग) 5:31-32 में उत्पत्ति की पुस्तक का उनका प्रयोग; और (घ) 5:24 का पहला शब्द (*alla*, "परन्तु"), जिसे संदर्भ के अनुरूप केवल तभी समझाया जा सकता है जब पौलुस पति की तुलना मसीह से उद्धारकर्ता के रूप में करते हैं, न कि प्रभु के रूप में।
3. पति के सिर होने का अर्थ, जैसा कि वह सिर-देह के रूपक और मसीह और कलीसिया की तुलना से निकलता है, यह है कि उस पर अपनी पत्नी की भलाई के लिए प्रेमपूर्ण आत्म-बलिदान का एक विशेष दायित्व है। यदि पति कोई मुकुट पहनता भी है, तो वह काँटों का मुकुट है।
4. पत्नियों को ऐसा व्यवहार करना चाहिए मानो उनके पति उनके स्वामी हों। इसका अर्थ यह नहीं कि पति अपनी पत्नियों के स्वामी हैं। पत्नी के अधीन रहने के कारणों के रूप में पौलुस मसीह के आदर्श और उसके प्रति श्रद्धा (पद 1-2, 21-22) तथा आत्म-बलिदानी सेवा के लिए पति के उत्तरदायित्व (पद 22-23) का उल्लेख करते हैं। वे कोई ऐसा कारण नहीं बताते जो पति के परमेश्वर-प्रदत्त एकतरफ़ा अधिकार पर आधारित हो।
5. पौलुस पद 21 में जिस अधीनता की माँग करते हैं, वह विश्वासियों का एक दूसरे के प्रति स्वैच्छिक, परस्पर अधीन रहना है। पति अपनी पत्नियों के संबंध में इससे अलग नहीं रखे गए हैं।
6. ऊपर समझाए गए सीमित और विशेष अर्थ में पौलुस पतियों और पत्नियों के उत्तरदायित्वों में अंतर करते हैं। वह समानतावादी दृष्टिकोण, जो उत्तरदायित्वों के हर स्पष्ट अंतर को अस्वीकार करता है, पौलुस द्वारा सिर-देह के रूपक और मसीह और कलीसिया की तुलना के प्रयोग से मेल नहीं खाता।
7. इफिसियों 5 के आदर्श के अनुसार जिए गए विवाह यीशु मसीह की नम्रता और अपनी कलीसिया के प्रति उसके बलिदानी प्रेम को अद्भुत रूप से प्रकट कर सकते हैं।
8. ऐसा लगता है कि पौलुस घर की साझी अगुवाई की अपेक्षा रखते हैं, और वे यह निर्धारित नहीं करते कि परिवार का उत्तरदायित्व पुरुषों और स्त्रियों के बीच कैसे बाँटा जाए।

अध्याय 5 का सारांश: सृष्टि और जीवन: उत्पत्ति 1-3 और उससे आगे

1. उत्पत्ति 1-3 की पूरकतावादी व्याख्या, जो पुरुष के अगुवाई वाले अधिकार का पक्ष लेती है, बाइबल के पाठ में कोई स्पष्ट आधार नहीं पाती। वह ऐसे निष्कर्षों पर आधारित है जो अधिक से अधिक अनिश्चित हैं। उनमें से कोई भी पाठ से अनिवार्य रूप से नहीं निकलता।
2. पुरुष या स्त्री होना सृष्टि द्वारा दिया गया एक तथ्य है। स्त्री को ऐसे प्रस्तुत किया गया है कि वह पुरुष की एक सशक्त सहयोगी होने के लिए रची गई है। यह पुरुष और स्त्री के बीच एक स्पष्ट भिन्नता की ओर संकेत करता

है।

3. उत्पत्ति का पाठ इस भिन्नता को परिभाषित या विस्तार से स्पष्ट नहीं करता। वह इस संभावना को खुला छोड़ता है कि अन्य शास्त्र-स्थल अगुवाई में उत्तरदायित्वों को प्रकट कर सकते हैं। परन्तु वह पुरुष के प्रभुत्व की नींव नहीं डालता। अपनी पत्नी पर पुरुष का प्रभुत्व, जैसा कि उत्पत्ति 3:16 में वर्णित है, पतन के एक नकारात्मक परिणाम के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह ऐसी बात नहीं है जिसे जानबूझकर आगे बढ़ाया जाए या और भी दृढ़ किया जाए।
4. पुराने नियम में ऐसा कोई पाठ नहीं है जो कहता हो कि पतियों को अपनी पत्नियों पर अधिकार चलाना चाहिए।
5. पवित्र शास्त्र परिवार की देखभाल में पुरुष और स्त्री की भूमिकाओं का कोई निश्चित बँटवारा निर्धारित नहीं करता। नीतिवचन 31 में गुणवती स्त्री का वर्णन, जो जीविका भी कमाती है और घर भी चलाती है, एक निश्चित ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिवेश में एक आदर्श चित्र प्रस्तुत करता है। लोगों की जीवन-परिस्थितियाँ, क्षमताएँ और वरदान भिन्न-भिन्न होते हैं। नीतिवचन 31 को बाध्यकारी नियम मानना पाठ को गलत समझना होगा।
6. सृष्टि के विषय में शिक्षा मसीही विवाह के प्रश्न का अंतिम उत्तर नहीं दे सकती, क्योंकि हमें इस प्रश्न से आगे जाना होगा कि “परमेश्वर ने पतन से पहले मूल सृष्टि को कैसे व्यवस्थित किया था?” और यह भी पूछना होगा: “छुड़ाए गए मनुष्यों के लिए परमेश्वर का उद्देश्य क्या है?” और “इस उद्देश्य को देखते हुए हमें अभी कैसे जीना चाहिए?”
7. उत्पत्ति 2:24 में विवाह की स्थापना का आत्मिक महत्व है, क्योंकि वह मसीह और उसकी कलीसिया के मिलन की ओर पहले से संकेत करती है (इफिसियों 5:31)। यदि उत्पत्ति 1-3 की पूरकतावादी व्याख्या सही भी होती, तो भी इससे यह नहीं निकलता कि मसीह में पुरुष को स्त्री पर प्रभुता करनी चाहिए। मसीह में छुटकारा विश्वासियों को आगे नई सृष्टि की ओर ले जाता है, न कि पीछे पतन से पहले के समय में।
8. पुराने नियम के वे उदाहरण, जिनमें स्त्रियाँ परमेश्वर की स्वीकृति के साथ अगुवाई करती हैं, इस बात से मेल नहीं खाते कि कोई ऐसा सिद्धांत हो जिसके अनुसार स्त्रियाँ कभी भी पुरुषों की अगुवाई न करें या उन पर अधिकार न चलाएँ।

अध्याय 6 का सारांश: अधीनता और आदर: 1 पतरस

1. पतरस का जीवन-दृष्टिकोण मसीह-केंद्रित है। हमारे प्रभु के नम्र प्रेम और अधीनता का उदाहरण पतरस की पहली पत्नी में स्पष्ट रूप से उभरकर आता है।
2. इसमें पतरस विचार करते हैं कि इसे विभिन्न परिस्थितियों पर कैसे लागू किया जा सकता है, जिनमें मसीही विश्वासियों को दूसरों का आदर करना चाहिए, और इनमें विवाह भी शामिल है।
3. पत्नियों के अपने पतियों के अधीन रहने के जो कारण पतरस बताते हैं, उनमें ये शामिल हैं: (क) उन्हें जीत लेना; (ख) नम्र आत्मा परमेश्वर को भाती है; और (ग) बीते समय की पवित्र स्त्रियों, जैसे सारा, का उदाहरण। वह कठिन परिस्थितियों में परमेश्वर के अधीन रहने को – और इस कारण अपने पति के अधीन रहने को भी – अद्भुत रूप से उत्साहवर्धक ढंग से दर्शाती है (3:1-6)। पत्नियों की अधीनता के लिए पतरस जो उपमाएँ देते हैं, वे हैं: सभी विश्वासियों को अधीन रहने का आह्वान (2:15-17), दासों को अन्यायी स्वामियों के भी अधीन

रहने का निर्देश (2:18-21), और मसीह का उदाहरण, जो उन लोगों के अधीन रहा जिन्होंने उसे अन्यायपूर्वक दुःख दिया (2:21-24)। उनके कारणों में यह शामिल नहीं है कि परमेश्वर की योजना ने पतियों को उनकी पत्नियों पर एकतरफ़ा अधिकार की स्थिति में रखा है। यदि वे इसे सत्य मानते, तो इसका उल्लेख करना एक अत्यंत स्वाभाविक कारण होता। पूरी बाइबल में कहीं भी ऐसा कोई शास्त्र-स्थल नहीं है जो पतियों को अपनी पत्नियों पर एकतरफ़ा अधिकार चलाने का निर्देश देता हो।

4. पतियों को भी "वैसे ही" नम्रता के साथ व्यवहार करना चाहिए और अपनी पत्नियों का आदर करना चाहिए (3:7)। यह परस्पर अधीनता की ओर संकेत करता है।
5. सच्चे परमेश्वर का वारिस कहलाना आदर का सर्वोच्च संभव स्थान है। पुरुष और स्त्री समान रूप से "जीवन के अनुग्रह के वारिस" हैं। सटीक अनुवाद, सावधानीपूर्वक पढ़ने और सही समझ के साथ 1 पतरस 3:1-7 स्त्री पर पुरुष के एकतरफ़ा अधिकार का समर्थन नहीं करता।
6. पितृसत्तात्मक संस्कृति ने 1 पतरस 3:1-7 का दुरुपयोग किया है। पतियों को अपनी पत्नियों पर दबाव नहीं डालना चाहिए। जहाँ घरेलू हिंसा हो, वहाँ उसे समाप्त करने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए।
7. मसीही संबंधों में परस्पर अधीनता उचित अगुवाई के साथ मेल खाती है। कलीसिया में मसीही अगुवाई का अर्थ दूसरे लोगों पर बलपूर्वक दबाव डालना नहीं है। जहाँ कलीसियाई अनुशासन आवश्यक हो, वहाँ सबसे कठोर उचित कदम बहिष्कार है – और उससे आगे कुछ नहीं।

अध्याय 7 का सारांश: ढके हुए अर्थ? 1 कुरिन्थियों 11

1. 1 कुरिन्थियों 11:3 एक ढाँचा-कथन है, जो प्रार्थना और भविष्यद्वाणी करने के विषय में पौलुस के विवेचन के ऊपर शीर्षक के रूप में खड़ा है। वही उनके तर्क को आधार देता है।
2. पौलुस का क्या अर्थ है, इसे त्रिएकत्व की शिक्षा की सूक्ष्म बारीकियों का हवाला देकर निश्चित या विश्वसनीय रूप से स्पष्ट नहीं किया जा सकता।
3. शब्द-अध्ययन दिखाते हैं कि "के ऊपर अधिकार" और "उद्गम" *kephalē* (सिर) के संभव रूपकात्मक प्रयोग हैं। अन्य स्थानों पर भाषा का प्रयोग यह निर्णय नहीं कर सकता कि इस पद में पौलुस का अभिप्रेत अर्थ कौन-सा है। उसे संदर्भ की जाँच के द्वारा निर्धारित करना होगा।
4. वह पदानुक्रमी व्याख्या, जो पौलुस की चिंता को स्त्रियों पर पुरुषों के अधिकार में देखती है, सही नहीं हो सकती, क्योंकि वह आठ बिंदुओं में पाठ का खंडन करती है। विशेष रूप से महत्वपूर्ण यह है: पदानुक्रमी व्याख्या के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि पौलुस के ढाँचा-कथन के कार्य की अनदेखी की जाए, पद 10 का गलत अनुवाद किया जाए और यह माना जाए कि पौलुस ने पद 11 उलटा लिखा है।
5. निर्णायक सांस्कृतिक परिवेश में स्त्रियों के बाल सामान्यतः दिखाई देते थे और घूँघट से छिपे नहीं होते थे (देखें 1 तीमुथियुस 2:9; 1 पतरस 3:3)। परन्तु कुरिन्थुस में मूर्तिपूजक रीतियाँ अनादरपूर्ण यौन व्यवहार को बढ़ावा देती थीं, विषमलैंगिक भी और समलैंगिक भी, और यह कुरिन्थुस की कलीसिया के लिए एक समस्या थी। पुरुषों के लंबे बाल, और स्त्रियों के ऐसे लंबे बाल जो सिर के ऊपर बाँधे जाने के बजाय खुले नीचे लटकते थे, दोनों ही ऐसे व्यवहार के लिए तत्परता का संकेत देते थे।

6. इस खंड को ऐसे पढ़ना, मानो वह घूँघट के विषय में हो, कई कठिनाइयाँ उत्पन्न करता है। पौलुस इस विषय में लिखते हैं कि बाल कैसे रखे जाते हैं, न कि स्त्रियों के घूँघट के विषय में। सही अनुवाद करने पर पद 2-16 आरंभ से अंत तक केशविन्यास के विषय में हैं, घूँघट के विषय में नहीं।
7. NIV पूरे खंड में *anēr* और *gunē* का अनुवाद उचित ही "पुरुष" और "स्त्री" करती है, न कि "पति" और "पत्नी"।

अध्याय 8 का सारांश: बाल जो अनादर करते हैं: 1 कुरिन्थियों 11

1. जैसे ही हम यह स्वीकार करते हैं कि 1 कुरिन्थियों 11:3 में पौलुस का धर्मवैज्ञानिक आधार उद्गम है, और कि वे आराधना-सभा में भविष्यद्वाणी करने वालों या ऊँचे स्तर में प्रार्थना करने वालों के केशविन्यास की बात कर रहे हैं, तो हम पाते हैं कि वे एक निरंतर, तर्कसंगत और सुसंगत तर्क विकसित करते हैं। कम से कम दस संकेत हैं कि उद्गम और केशविन्यास के अर्थ में व्याख्या पौलुस के लिखे हुए को मूल रूप से सही पकड़ती है। उद्गम के अर्थ वाली व्याख्या के विरुद्ध आपत्तियाँ विश्वसनीय नहीं हैं।
2. पौलुस की चिंता स्वयं बालों से नहीं, बल्कि उस अनादरपूर्ण संदेश से है जो कुरिन्थियों के केशविन्यास देते हैं। उनके व्यवहार को पुरुषों और स्त्रियों के लिए परमेश्वर के उन उद्देश्यों का, जो उत्पत्ति में सिखाए गए हैं, आदर करना चाहिए था, न कि अनादरपूर्ण और इन उद्देश्यों के विपरीत दिखाई देना चाहिए था। इस संदर्भ में महत्वपूर्ण: इन उद्देश्यों में विश्वासयोग्य, एकविवाही, विषमलैंगिक विवाह शामिल है। पौलुस मसीह में छुटकारे पर भी बल देते हैं: यद्यपि सृष्टि में पुरुष और स्त्री अपनी लैंगिकता के द्वारा भिन्न हैं, फिर भी छुटकारे में वे प्रभु में एक हैं। पुरुष और स्त्रियाँ एक दूसरे पर निर्भर हैं और उन्हें एक दूसरे के योगदान की आवश्यकता है। प्रार्थना और भविष्यद्वाणी पुरुषों और स्त्रियों द्वारा इस प्रकार की जानी चाहिए कि वे परमेश्वर का आदर करें, जो सृष्टि और छुटकारे दोनों का उद्गम है।
3. इस खंड में पौलुस स्त्री पर पुरुष के किसी अधिकार के विषय में कुछ नहीं कहते। न ही वे इस विषय में कुछ कहते हैं कि कलीसिया में अगुवाई और शिक्षा के कुछ कार्य पुरुषों के लिए आरक्षित हैं। यदि कोई स्त्री पर पुरुष के अधिकार और स्त्रियों की सेवा पर प्रतिबंधों की धारणाओं को सहारा देना चाहता है, तो यह अन्य शास्त्र-स्थलों के हवाले से करना होगा।

अध्याय 9 का सारांश: चुप रहने वाली स्त्रियाँ? 1 कुरिन्थियों 14

1. पद 34-35 एक इकाई बनाते हैं जो पद 33 से अलग है। पद 33 को दो भागों में बाँटकर आंशिक रूप से पद 34 के साथ नहीं जोड़ना चाहिए, जैसा कि कुछ आधुनिक अनुवादों में होता है।
2. इन दोनों पदों की विषय-वस्तु आसपास के संदर्भ के तीव्र विरोध में है। यह विरोध व्याख्या के ऐसे प्रश्न उठाता है जिनका कोई संतोषजनक समाधान नहीं मिला है।
3. ऐसा लगता है कि पौलुस कह रहे हैं कि स्त्रियों का चुप रहना प्रभु यीशु की एक आज्ञा द्वारा निर्धारित है। यह एक और पहेली है।
4. चूँकि व्याख्या की इन पहेलियों का कोई संतोषजनक समाधान नहीं है, इसलिए हम यह नहीं कह सकते कि हम इन पदों के विषय में क्या सोचें। विशेष रूप से हम यह आकलन नहीं कर सकते कि स्त्रियों के बोलने पर

ऐसा प्रतिबंध, जो पुराने नियम के किसी अपहचाने शास्त्र-स्थल (पद 34) और सांस्कृतिक कारणों (पद 35) पर आधारित है, अन्य समयों और संस्कृतियों की कलीसियाओं पर लागू होना चाहिए या नहीं।

अध्याय 10 का सारांश: चुप्पी जोड़ी गई? 1 कुरिन्थियों 14

1. यह विश्वास कि पवित्र शास्त्र अपने मूल रूप में परमेश्वर का प्रकाशन है, मसीही विद्वानों को इस बात के लिए बाध्य करता है कि जहाँ तक संभव हो, वे यह सुनिश्चित करें कि कलीसिया सटीक प्रतियों का उपयोग करे और प्रतिलिपि की त्रुटियों या अप्रामाणिक परिवर्तनों को बाध्यकारी न माने।
2. जो पाठ हमारी आज की बाइबलों में 1 कुरिन्थियों 14:34-35 के रूप में छपा है, वह संभवतः प्रामाणिक नहीं है। वर्तमान में उपलब्ध प्रमाणों की समग्रता की सबसे अच्छी व्याख्या यह है कि पौलुस के अतिरिक्त किसी और ने पद 34-35 को एक प्रारंभिक हाशिया-टिप्पणी (ग्लॉस) या टीका के रूप में हाशिये पर लिखा। प्रतिलिपिकारों ने इस हाशिया-टिप्पणी को भूल से मूल पत्र का भाग समझा और उसे मुख्य पाठ में ले लिया, परन्तु वे निश्चित नहीं थे कि उसे किस स्थान पर डालें। उन्होंने उसे दो अलग-अलग स्थानों पर डाला (कुछ ने पद 33 के बाद, दूसरों ने पद 40 के बाद)।
3. यह व्याख्या सभी उपलब्ध प्रमाणों के साथ न्याय करती है, बाहरी के साथ भी और भीतरी के साथ भी। वह किसी भी विश्वसनीय प्रमाण के विरोध में नहीं है। वह इन पदों से जुड़ी हर ऐतिहासिक और व्याख्या-संबंधी समस्या का समाधान करती है, जिसमें हस्तलिपियों के साक्ष्य की सभी प्रासंगिक विशेषताएँ शामिल हैं। कोई और व्याख्या इन मानदंडों को पूरा नहीं करती।

अध्याय 11 का सारांश: शिक्षा देना और 1 तीमुथियुस 2: कठिनाइयाँ

1. 1 तीमुथियुस की पत्री में पौलुस के निर्देशों का उद्देश्य झूठी शिक्षा और भक्तिहीनता का सामना करना और मसीह में सही शिक्षा और भक्ति को बढ़ावा देना है।
2. 1 तीमुथियुस 2:11-15 में पौलुस द्वारा स्त्रियों पर लगाए गए प्रतिबंध के अर्थ पर बहस है। उन सबसे बड़ी कठिनाइयों में, जिनसे सभी व्याख्याकारों को जूझना पड़ता है, ये शामिल हैं: (क) इफिसुस की परिस्थितियों के विषय में हमारी जानकारी का अधूरापन, (ख) पद 12 की दुर्लभ क्रिया *authentēō* के अर्थ के विषय में अनिश्चितता, और (ग) निर्णायक खंड में पौलुस की संक्षिप्त, सघन लेखन-शैली।
3. पौलुस के प्रतिबंध के अर्थ पर बहस किसी निरपेक्ष और सार्वभौमिक व्याख्या और किसी सशर्त और सीमित व्याख्या के बीच की प्रतिस्पर्धा नहीं है। दोनों पक्ष स्वीकार करते हैं कि पौलुस का अभिप्राय किसी न किसी रूप में सीमित होना चाहिए, ताकि वह स्त्रियों द्वारा शिक्षा देने की उनकी स्वीकृति से मेल खाए। विवाद इस बात पर है कि उनके द्वारा अभिप्रेत सीमा किस प्रकार की है।
4. समानतावादियों ने यह सुझाव दिया है कि पद 12 में पौलुस का प्रतिबंध इफिसुस की किसी विशेष अस्थायी समस्या को दूर करने तक सीमित है। परन्तु उनके लिए पौलुस के अर्थ की ऐसी व्याख्या खोजना कठिन रहा है जो इफिसुस की वास्तविक घटनाओं के विषय में उपलब्ध प्रमाणों और पौलुस के लिखे हुए के विवरणों, दोनों से मेल खाए। मैंने चार कठिन प्रश्नों की ओर संकेत किया है, जिनका उत्तर समानतावादी व्याख्याएँ कठिनाई से ही दे पाती हैं।

5. पूरकतावादी यह दावा करते हैं कि पद 12 में पौलुस की चिंता यह है कि कलीसिया में अधिकारपूर्ण शिक्षा कौन देता है। परन्तु इसके साथ गंभीर कठिनाइयाँ जुड़ी हैं। उनमें निम्नलिखित शामिल हैं:
- “मैं अनुमति नहीं देता” / “मैं इस समय अनुमति नहीं देता” एक ऐसा स्थायी नियम बनाने के लिए अजीब अभिव्यक्ति होगी जो सब समयों और सब स्थानों पर कलीसिया की सब सार्वजनिक सभाओं पर लागू हो। पौलुस का प्रतिबंध उन विशेष व्यक्तियों पर लागू होता है जो उसके अधिकार-क्षेत्र में आते हैं। बाइबल में कहीं और इस अभिव्यक्ति का प्रयोग कोई स्थायी नियम बनाने के लिए नहीं किया गया है। कोई सर्वमान्य सिद्धांत केवल तभी निकाला जा सकता है जब पद 13 को इस रूप में समझा जाए कि पौलुस किसी सृष्टि-सिद्धांत का हवाला दे रहा है।
 - पौलुस कहीं भी स्पष्ट रूप से नहीं कहता कि स्थानीय कलीसिया की अगुवाई केवल पुरुषों के लिए आरक्षित होनी चाहिए। यदि पौलुस पद 12 में पुरुषों के अगुवाई के अधिकार की रक्षा करना चाहता, तो उसे स्त्रियों को पुरुषों से भविष्यद्वाणी के रूप में बात करने से भी मना करना पड़ता; परन्तु 1 कुरिन्थियों की पत्री में उसने इसकी अनुमति दी है।
 - पवित्र शास्त्र किसी ऐसी विशेष अधिकारपूर्ण शिक्षा-सेवा को स्पष्ट रूप से मान्यता नहीं देता जो अन्य मसीही शिक्षा-सेवाओं से भिन्न हो और पुरुषों के किसी विशेष समूह को सौंपी गई हो।
 - यदि पौलुस सचमुच यह मानता है (जैसा पूरकतावादी दावा करते हैं) कि उत्पत्ति 2 अधिकारपूर्ण पुरुष-अगुवाई का एक सृष्टि-सिद्धांत सिखाता है जो कलीसिया पर लागू होता है, तो यह सिद्धांत पूरे जीवन पर लागू होना चाहिए। परन्तु पूरकतावादी स्वयं इसका खंडन करते हैं, क्योंकि वे इसे इतने व्यापक रूप से लागू करने में हिचकिचाते हैं। उनका विश्लेषण इस बात की कोई सुसंगत व्याख्या नहीं देता कि पौलुस उत्पत्ति की पुस्तक का सहारा क्यों लेता है।
6. यह बहस एक बंद गली में पहुँच गई है। एक नई शुरुआत की आवश्यकता है। दोनों पक्षों के अधिकांश टीकाकारों ने यह मान लिया है कि 1 तीमुथियुस 2 में पौलुस विशेष रूप से कलीसिया की सार्वजनिक सभाओं में व्यवहार के लिए निर्देश दे रहा है। परन्तु यह पौलुस के लिखे हुए के विवरणों से मेल नहीं खाता। इस बंद गली से निकलने के लिए सबसे पहले यह पहचानना आवश्यक है कि अध्याय 2 का केंद्र कलीसिया की सार्वजनिक सभा नहीं है।

अध्याय 12 का सारांश: शिक्षा देना और 1 तीमुथियुस 2: संदर्भ से मिलने वाली कुंजियाँ

1. चार कुंजियाँ 2:9-15 की ऐसी व्याख्या का मार्ग खोलती हैं जो पूरी तरह साहित्यिक और ऐतिहासिक संदर्भ में जड़ पकड़े हुए है। पहली कुंजी यह सुनिश्चित करना है कि हम इन पदों को सचमुच 1:1-2:8 के संदर्भ में पढ़ें। दूसरी कुंजी यह है कि 1 तीमुथियुस की पत्री में स्त्रियों के विषय में दोनों लंबे खंडों को एक साथ देखा जाए। जब हम देखते हैं कि 5:3-16 से ऐतिहासिक संदर्भ के विषय में क्या पता चलता है, तो हम स्वयं को पत्री के पहले पाठक तीमुथियुस की स्थिति में अधिक अच्छी तरह रख पाते हैं। यह 2:9-15 की हमारी समझ में बहुत योगदान देता है। तीसरी कुंजी यह होगी कि *authentēō* का अर्थ पहले अस्थायी रूप से संदर्भ से निकाला जाए और फिर उसे संभावित अर्थों के पूरे दायरे से जाँचा जाए। चौथी कुंजी यह होगी कि उन मार्ग-संकेतों पर ध्यान दिया जाए जो पौलुस पद 15 में रखता है।

2. इफिसुस की कलीसिया की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के विषय में जानकारी एक ऐसे वातावरण को दिखाती है जिसमें जादू-टोने की कलाएँ और ज्योतिष का अभ्यास होता था। अपनी पत्नी में पौलुस जादू और ज्योतिषीय विचारों की ओर संकेत करता है। इफिसुस में फैल रही झूठी शिक्षा में टोना और ज्योतिष शामिल हैं। इन प्रभावों का विरोध करना बुराई की अदृश्य शक्तियों के विरुद्ध एक आत्मिक संघर्ष है।
3. पद 11-12 में पौलुस कुछ विशेष धनी स्त्रियों की बात कर रहा है, जिनका भक्तिहीन व्यवहार पद 9-10 में उसकी कड़ी चेतावनियों का कारण बनता है। वे आलसी हैं। वे अशोभनीय ढंग से और फिज़ूलखर्च ठाठ-बाट के साथ कपड़े पहनती हैं। वे घर-घर घूमती हैं, हर एक ऐसे पुरुष की खोज में जो उसकी कामुक इच्छाओं को तृप्त करे, और झूठी शिक्षा फैलाती हैं। इसके स्थान पर इन स्त्रियों को परमेश्वर के प्रति पूर्ण अधीनता में अच्छे काम करना सीखना चाहिए और एक शांत, भक्तिपूर्ण जीवन बिताना चाहिए। ये स्त्रियाँ बुराई के प्रभाव में हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे वही झूठी शिक्षिकाएँ हैं जो अब भी कलीसिया में बनी हुई हैं और जिनसे तीमुथियुस को निपटना है। उसे उन्हें डाँटना है और यह सुनिश्चित करना है कि उनमें से कोई भी कलीसिया में प्राचीन या सेविका का पद तब तक न संभाले जब तक वह अपने नए जीवन और बदले हुए चरित्र को प्रमाणित न कर दे।

अध्याय 13 का सारांश: शिक्षा देना और 1 तीमुथियुस 2: पौलुस का तर्क

1. यदि हम तीसरी कुंजी लागू करें, तो 1 तीमुथियुस 2:9-12 के संदर्भ में *authentēō* का अर्थ “पराजित करना / वश में कर लेना” प्रतीत होता है। पौलुस का आशय यह है: “मैं महँगे और अशोभनीय वस्त्र पहनने वाली, मर्यादा और संयम से रहित किसी झूठी शिक्षिका को यह अनुमति नहीं देता कि वह किसी पुरुष को शिक्षा दे और उसे वश में कर ले: वह शांत और श्रद्धालु रहे और परमेश्वर के प्रति पूर्ण अधीनता में सत्य के अनुसार आचरण करना सीखे।”
2. यह व्याख्या बिना कठिनाई के समझाती है कि पौलुस पद 13-14 में उत्पत्ति की पुस्तक का हवाला क्यों देता है। पौलुस पद 11-12 के अपने कथन को उस पहले आत्मिक संघर्ष की ओर लौटकर पुष्ट करता है जिसका वर्णन पवित्र शास्त्र करता है: वहाँ एक स्त्री को शैतान ने धोखा दिया, जिससे उसने वर्जित ज्ञान को अपना लिया; उसने एक पुरुष को गलत शिक्षा दी और उसे वश में कर लिया – जिसके भयानक परिणाम हुए।
3. पौलुस इस दुर्लभ शब्द को इसलिए चुनता है क्योंकि ज्योतिषीय परंपरा में इसका प्रयोग इसी अर्थ में होता है; और यह परंपरा उस झूठी शिक्षा का भाग है जिसे धनी स्त्रियाँ फैला रही हैं। यह शब्द टोने से और मृत्यु से भी जुड़ा है, जो छुटकारे का विपरीत है।
4. व्याख्या की यह दिशा पद 15 के अर्थ पर प्रकाश डालती है, जिसे परंपरागत रूप से एक कठिन पद माना जाता है। यह उस छुटकारे की बात करता है जो मसीहा के जन्म के द्वारा होता है, और साथ ही अरतिमिस पंथ की धार्मिक धारणाओं की ओर एक तिरछी दृष्टि भी डालता है।
5. यदि हम चौथी कुंजी लागू करें, तो हम देखते हैं कि पौलुस पद 15 में दो मार्ग-संकेत रखता है। वह पाठक को बताता है कि वह पद 11-12 की “स्त्री” (पद 15 में “वह ... पाएगी”) को पद 9-10 की “स्त्रियों” (पद 15 में “वे ... बनी रहें”) के समान मानता है। इससे यह पुष्टि होती है कि पद 11-12 में पौलुस का निर्देश पद 9-10 की स्त्रियों से संबंधित होना चाहिए। इसके अतिरिक्त वह असामान्य शब्दावली का प्रयोग करके 2:15 (*tekhnogonia*) और 5:14 (*tekhnogoneō*) के बीच एक स्पष्ट भाषाई और विषयगत संबंध स्थापित करता है।

यह इस बात की ओर पुष्टि करता है कि यदि पाठक अध्याय 2 में स्त्रियों के विषय में उसके कथनों को अध्याय 5 में स्त्रियों के विषय में उसके कथनों के साथ पढ़ें, तो वे संदर्भ को अधिक अच्छी तरह समझ सकते हैं।

6. ऊपर दी गई व्याख्या पौलुस के उस निरंतर, सुसंगत विचार-क्रम में ठीक बैठती है जो अध्याय 1 से शुरू होकर पूरी पत्र में चलता है। यह दिखाती है कि अध्याय 2 किस प्रकार अध्याय 3 की ओर ले जाता है। इसके अतिरिक्त यह 2:12 से संबंधित उन चार कठिन प्रश्नों का उत्तर देती है जिनकी ओर मैंने ऊपर अध्याय 11 में संकेत किया था।
7. 1 तीमुथियुस 2 का खंड न तो कलीसिया में स्त्रियों के शिक्षा देने पर किसी सामान्य प्रतिबंध को उचित ठहराता है और न ही कलीसिया में स्त्रियों के अधिकार का प्रयोग करने पर किसी सामान्य प्रतिबंध को।

अध्याय 14 का सारांश: स्त्रियाँ कलीसिया की अगुवों के रूप में? एक बाइबलीय सर्वेक्षण

1. ऐसे किसी नियम को, जिसके अनुसार केवल पुरुष ही कलीसिया की अगुवाई कर सकते हैं, न तो 1 कुरिन्थियों 14:34-35 से और न ही 1 तीमुथियुस 2:11-15 से उचित ठहराया जा सकता है।
2. यह बात कि यीशु ने बारह यहूदी पुरुषों को प्रेरित चुना, यह निर्धारित नहीं करती कि स्थानीय कलीसिया की अगुवाई के लिए कौन-सी योग्यताएँ लागू होती हैं।
3. पुराने नियम में शिक्षा देने का काम अधिकांशतः, परन्तु पूरी तरह नहीं, याजकों के पास था। याजकीय कार्य यीशु के द्वारा पूरा हो गया है; और मसीह में सब विश्वासी “याजक” हैं। यदि कोई याजकपद को अगुवाई या शिक्षा देने के कार्य के बराबर मानना चाहे, तो अगुवाई और शिक्षा देने के कार्य अब संभावित रूप से परमेश्वर के सम्पूर्ण लोगों के लिए खुले हैं, लिंग के भेद के बिना।
4. अध्याय 4, 5, 7 और 8 में हमने “सिर होने” की धारणाओं की जाँच की। इफिसियों 5, उत्पत्ति 1-3 और 1 कुरिन्थियों 11 स्त्रियों की सेवा पर किसी प्रतिबंध का समर्थन नहीं करते।
5. कलीसिया की अगुवाई करना और कलीसिया में शिक्षा देना एक दूसरे से मेल खा सकते हैं; परन्तु ये भिन्न कार्य हैं। स्त्रियों के शिक्षा देने पर प्रतिबंध यह प्रमाणित नहीं करेगा कि स्त्रियाँ प्राचीन नहीं बन सकतीं। इसके विपरीत, स्त्रियों को शिक्षा देने की अनुमति यह प्रमाणित नहीं करती कि वे प्राचीन बन सकती हैं।
6. आरंभिक कलीसिया में स्त्रियों ने प्रमुख कार्य किए। उन्होंने निर्णायक रूप से योगदान दिया और बाहरी लोग भी उन्हें इसी रूप में देखते थे। परन्तु इससे हमें विस्तार से यह पता नहीं चलता कि क्या स्थानीय कलीसियाओं में स्त्रियों को मान्यता-प्राप्त अगुवाई के पदों पर नियुक्त किया गया था।
7. यह ध्यान रखना आवश्यक है कि स्त्रियों के कार्यों और भूमिकाओं से संबंधित नए नियम के प्रमाणों को न तो बढ़ा-चढ़ाकर आँका जाए और न ही कम करके। उदाहरण के लिए, यह प्रमाणित नहीं किया जा सकता कि फीबे किसी कलीसिया में अगुवाई का कार्य करती थी; इसके विपरीत हम बड़े विश्वास के साथ कह सकते हैं कि यूनिया एक प्रमुख मिशनरी प्रेरित थी।
8. नए नियम में हमें नाम से उल्लिखित ऐसी कोई स्त्री नहीं मिलती जिसे व्यावहारिक निश्चितता के साथ प्राचीन ठहराया जा सके। परन्तु विशेष उदाहरणों (पतरस और यूहन्ना) को छोड़कर यही बात पुरुषों पर भी लागू होती

है। यदि हम अपनी खोज को संभावनाओं तक बढ़ाएँ, तो हम पुरुषों और स्त्रियों दोनों को पहचान सकते हैं – जब तक कि स्त्रियों के लिए प्राचीन पद पर कोई स्पष्ट प्रतिबंध न रहा हो।

9. नए नियम के विचार और जीवन के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में यह सामान्य रूप से नहीं माना जाता था कि केवल पुरुष ही प्राचीन हो सकते हैं। यदि प्रेरितों का अभिप्राय यह होता कि स्त्रियाँ कभी भी कलीसिया की अगुवाई में भाग न लें और प्राचीन के रूप में सेवा न करें, तो भविष्य के लिए कलीसिया को दिशा देने हेतु उन्हें यह स्पष्ट रूप से कहना पड़ता। परन्तु जो खंड प्राचीनों या अगुवों के विषय में हैं, जैसे प्रेरितों के काम 14:23; 1 पतरस 5:1-5; इब्रानियों 13:17, उनमें ऐसा कोई कथन नहीं है जो प्राचीन पद या अगुवाई को पुरुषों तक सीमित करे।

अध्याय 15 का सारांश: स्त्रियाँ प्राचीन के रूप में? 1 तीमुथियुस 3

1. प्राचीनों की नियुक्ति के विषय में सबसे विस्तृत निर्देश प्राचीन पद की योग्यताओं की उन सूचियों में मिलते हैं जिन्हें पौलुस देता है (1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:5-9)। अधिकांश अंग्रेज़ी अनुवाद जो प्रभाव देते हैं उसके विपरीत, यूनानी पाठ में इन सूचियों में स्त्रियों का कोई स्पष्ट बहिष्कार नहीं है। प्रसिद्ध पूरकतावादी विद्वान इसे स्वीकार करते हैं। इन खंडों में (विशेषकर 1 तीमुथियुस 3 में) ऐसे सकारात्मक संकेत हैं कि स्त्रियाँ “प्राचीन” की योग्यताएँ पूरी कर सकती हैं, उस अर्थ में जिसमें नया नियम इस शब्द का प्रयोग करता है।
2. “एक पत्नी का पति” मुहावरा, जिसका प्रयोग पौलुस 1 तीमुथियुस 3:2 और तीतुस 1:6 में करता है, मसीही यौन-नैतिकता के प्रति विश्वासयोग्यता की ओर संकेत करता है और इसे सामान्य (जेनेरिक) अर्थ में समझा जाना चाहिए, ताकि इसमें “एक पति की पत्नी” भी शामिल हो।
3. प्राचीनों या पास्ट्रों का एक निर्णायक कार्य झुंड का रखवाला होना है। इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि केवल पुरुष ही प्राचीन या पास्टर होने चाहिए। यदि हम “एक पत्नी का पति” को सामान्य अर्थ में समझें, तो 1 तीमुथियुस 3:1-7 में पौलुस द्वारा गिनाई गई सभी सत्रह योग्यताएँ ऐसे गुण और आचरण हैं जो पुरुषों में भी पाए जाते हैं और स्त्रियों में भी। यही विशेषता तीतुस 1:5-9 की संबंधित सूची में भी दिखाई देती है।
4. सारांश में: पवित्र शास्त्र स्त्रियों के कलीसिया के प्राचीन बनने पर किसी सामान्य प्रतिबंध का समर्थन नहीं करता। इसी प्रकार स्त्रियों के स्थानीय कलीसिया में कोई अन्य कार्य करने पर भी कोई प्रतिबंध नहीं है। पुरुषों और स्त्रियों की पूरकता (एक दूसरे को पूरा करना) यह सुझाव देती है कि अगुवाई में पुरुषों और स्त्रियों दोनों का होना लाभदायक है।
5. अध्याय 11 से 15 में मैंने समझाया है कि 1 तीमुथियुस 2-3 का स्त्रियों के शिक्षा देने और प्राचीन पद पर स्त्रियों के लिए क्या अर्थ है। यह व्याख्या नए नियम के उपलब्ध प्रमाणों और ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक संदर्भ की जानकारी को ध्यान में रखती है; इसमें एक ऐसी सरलता है जो बिना आधार के अनुमानों पर निर्भर नहीं करती; और यह हमारी जाँच के तात्कालिक केंद्र से बाहर के अन्य क्षेत्रों पर भी प्रकाश डालती है। ये तीन विशेषताएँ इस पर भरोसा करने का कारण देती हैं।

अध्याय 16 का सारांश: लेखा-जोखा करना और एक दूसरे के निकट आना

1. अध्याय 2 से 15 में प्राप्त निष्कर्ष विवाह के एक ऐसे दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं जो पदानुक्रमिक नहीं है और आंशिक रूप से पूरक है; साथ ही वे इस बात पर किसी भी सामान्य प्रतिबंध को अस्वीकार करते हैं कि स्त्रियाँ कलीसियाओं में शिक्षा दें या अगुवाई करें।
2. अधीनता की धारणा को नम्रता और समानता के मसीही विरोधाभास के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। परमेश्वर के लोगों में से सब उसके अपार अनुग्रह के समान अधिकार वाले वारिस हैं। यीशु मसीह के आदर्श के कारण नम्रता मसीही जीवन के केंद्र में है।
3. हमारे निष्कर्ष इस विषय की पूर्वधारणाओं पर निर्भर नहीं हैं कि विश्वासियों के आचरण का मार्गदर्शन किस सीमा तक सृष्टि के द्वारा और किस सीमा तक नई सृष्टि के द्वारा होना चाहिए। परन्तु वे वर्तमान स्थिति में अच्छी तरह बैठते हैं, जिसमें सृष्टि (पृष्ठभूमि के रूप में) और नई सृष्टि (अग्रभूमि के रूप में) एक दूसरे पर छाई हुई हैं।
4. पति अपनी पत्नियों पर प्रभुता करने के बजाय उनकी सेवा करने के लिए बुलाए गए हैं। स्त्रियों को कलीसिया की अगुवाई के लिए बुलाना पवित्र शास्त्र के विरुद्ध नहीं है। यह डरने का कोई कारण नहीं है कि ये नियुक्तियाँ लिंगों के भ्रम की ओर ले जा सकती हैं।
5. कुछ व्याख्याएँ अधूरी रह जाती हैं, क्योंकि व्याख्याकार की पवित्र शास्त्र से अपेक्षाएँ बहुत कम थीं। पाठों का सावधानीपूर्वक अध्ययन बाइबल के लेखकों को नए सिरे से सराहने की ओर ले जाना चाहिए – परमेश्वर की महिमा के लिए।
6. जब कलीसियाएँ, कलीसियाई संघ और अन्य संगठन अपने को सुसमाचारवादी (इवैन्जेलिकल) कहलाने का दावा करते हैं, तो वे इसके द्वारा यह दायित्व स्वीकार करते हैं कि नया नियम एकता के विषय में जो कहता है उसका पालन करें।
7. इस समय गुटबाज़ी की सोच से प्रभावित इस बहस के दोनों पक्षों में कमज़ोरियाँ हैं। व्याख्या के मतभेदों को दूर करके एकता तक पहुँचने के लिए और काम की आवश्यकता है।
8. समानतावादियों के ये दावे छोड़ दिए जाने चाहिए कि पूरकतावादी निम्न उद्देश्यों से प्रेरित हैं।
9. पूरकतावादियों को इस बहस के विषय में अपनी समझ को नई दिशा देनी होगी। विवाह या स्त्रियों की सेवा के विषय में समानतावादी विचार धर्मवैज्ञानिक उदारवाद की ओर नहीं ले जाते। उन विश्वासियों के बीच, जो बाइबल के अधिकार को स्वीकार करते हैं, निर्णायक प्रश्न पवित्र शास्त्र की आज्ञाकारिता के प्रश्न नहीं हैं, बल्कि व्याख्या के प्रश्न हैं, जिन्हें रूढ़िवादी (ऑर्थोडॉक्स) विधियों से सुलझाया जाना चाहिए। अब समय आ गया है कि पूरकतावादी यह दावा करना बंद करें कि पूरकतावादी व्याख्याओं के प्रति सुसमाचारवादी असहमति पवित्र शास्त्र के अधिकार या सुसमाचार की सच्चाई को खतरे में डालती है।
10. यीशु उन लोगों की एकता के लिए प्रार्थना करता है जो उसके पीछे चलेंगे (यूहन्ना 17:11, 20-23), ताकि संसार जाने कि पिता ने उसे भेजा है। मसीह-केंद्रित विश्व-दृष्टि में यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण लक्ष्य है। एकता को बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास करने का प्रेरित नियम आपसी सम्मान के आधार पर एक नई बातचीत की माँग करता है। जिन्होंने स्त्रियों की अगुवाई या सेवा के विषय में विरोधी स्थितियाँ अपनाई हैं, उन्हें यह पहचानना होगा कि यह सुसमाचार का कोई मूल प्रश्न नहीं है; उन्हें बाइबल के तर्कों को फिर से जाँचना होगा,

इस बात का ध्यान रखना होगा कि केवल ठोस व्याख्या-विधियों का ही प्रयोग करें, और सबसे बढ़कर संबंधित खंडों के संदर्भ और विचार-क्रम पर अधिक ध्यान और अधिक महत्व देना होगा। तब तक हमें एक दूसरे को ग्रहण करना चाहिए, जैसे प्रभु ने हम सबको ग्रहण किया है (रोमियों 15:7)।